

## दीवसागरणपण्णत्तिपड्डणयं (फोल्डर नं. ११४१)

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

प्रस्तुत प्रकाशन के अर्थ सहयोगी

विषयानुक्रम

भूमिका-----	१-७६
मानुषोत्तर पर्वत - १-१८-----	२-५
नलिनोदक आदि सागर - १९२४-----	५-७
नन्दीश्वर द्वीप - २५-----	७
अंजन पर्वत और उनके ऊपर जिनदेव के मंदिर - २६-४७-----	७-११
दधिमुख पर्वत और उनके ऊपर जिनदेव के मंदिर - ४८-५१-----	११
अंजन पर्वतों की पुष्करिणियाँ - ५२-५७-----	१३
रतिकर पर्वत और शक्र ईशान देव-देवियों की राजधानियाँ - ५८-७०१-----	१३-१५
कुण्डल द्वीप - ७१-----	१५
कुण्डल पर्वत - ७२-७५-----	१५
कुण्डल पर्वत के पर सोलह शिखर - ७६-८३-----	१७
कुण्डल पर्वत के शिखरों पर सोलह नागकुमार देव - ८४-८६-----	१७
कुण्डल पर्वत के भीतर सौधन्म ईशान लोकपालों की राजधानियाँ - ८७-९७-----	१९
कुण्डल पर्वत के बाहर त्रायस्त्रिंशकों और उनकी अग्रमहिषियों की राजधानियाँ - १०२-१०९-----	२१-२३
कुण्डल समुद्र - ११०-----	२३
रुचक द्वीप - १११-----	२३
रुचक पर्वत - ११२-११६-----	२३
रुचक पर्वत पर शिखर - ११७-१२६-----	२३-२५
दिशाकुमारियाँ और उनके स्थान - १२७-१४२-----	२५-२९
दिग्हस्ति शिखर - १४३-१४८-----	२९-३१
रतिकर पर्वत पर शक्र ईशान सामानिक देवों के उत्पादक पर्वत और राजधानियाँ - १४९-१५५-----	३१-३३
जम्बूद्वीप आदि द्वीपों और समुद्रों के अधिपतिदेव - १५६-१६५-----	३३-३७
तिगिञ्छ पर्वत - १६६-१७३-----	३७
चमरचंचा राजधानी - १७४-२२५-----	३९-४७
<b>परिशिष्ट</b>	
(१) द्वीपसागरप्रज्ञप्ति प्रकीर्णक की गाथानुक्रमणिका-----	४८-५२
(२) सहायक ग्रन्थ सूची-----	५३-५४